4. चम्पू काव्य

चम्पू श्रव्य काव्य का एक भेद है अर्थात् गद्य-पद्य के मिश्रित काव्य को चम्पू कहते हैं। गद्य तथा पद्य मिश्रित काव्य को चम्पू कहते हैं। गद्य पद्यमय काव्य चम्पूरित्यमिधीयते।

'चम्पू' शब्द का अर्थ है कविता और गद्य का मिश्रण। चम्पू काव्य में गद्य (गद्य काव्य) और पद्यकाव्य का मिश्रण होता है जिसमें गद्य खण्डों के बीच छन्द भी होते हैं। वैदिक काल से ही चम्पू काव्य के प्रमाण मिलते हैं।

गद्य-पद्य का सम्मिश्रण संस्कृत साहित्य में प्राचनी है, परन्तु काव्यशैली में निबद्ध 'चम्पू' की संज्ञा का अधिकारी गद्य-पद्य का सम्मिश्रण उतना प्राचीन नहीं माना जा सकता। गद्य-पद्य की मिश्रित रचना कृष्णयजुर्वेदीय संहिताओं में उपलब्ध होती है। पालि जातकों में भी गद्य में कथानक तथा पद्य (गाथा) में सूत्रात्मक संकेतों की उपलब्धि अवश्य होती है। परन्तु काव्यशास्त्र से विरहित होने के कारण इन्हें हम 'चम्पू' का दृष्टान्त किसी प्रकार नहीं मान सकते। हरिषेव रहित समुद्रगुप्त की प्रयागप्रशस्ति (समय 350 ई.) तथा बौद्ध कवि आमशूर (चतुर्थ

Scanned with CamScanner

शती) प्रणीत जातकमाला चम्पू के आदिम रूप माने जाते हैं। क्योंकि पहले में समुद्रगुप्त की दिग्विजय तथा दूसरे में 34 जातक विशुद्ध काव्यशैली का आश्रय लेकर अलंकृत गद्य-पद्य में वर्णित है। प्रतीत होता है कि चम्पू गद्य काव्य का ही एक परिवर्तित रूप है और इसीलिए गद्य काव्य के सुवर्णयुग (सप्तम अष्टम शती) के अनन्तर नवम शती के आस-पास इस काव्य रूप का उदय हुआ।

चम्पू काव्य का प्रारम्भ हमें अथर्ववेद से प्राप्त होता है। चम्पू नाम के प्रकृत काव्य की रचना दसवी शती के पहले नहीं हुई। प्रिविक्रम भट्ट द्वारा रचित 'नलचम्पू' जो दसवीं सदी के प्रारम्भ की रचना है, चम्पू का प्रसिद्ध उदाहरण है। इसके अतिरिक्त सोमदेव सूरि द्वारा रचित यश: तिलक भोजराज कृत चम्पू रामायण, कवि कर्णपरिकृत आनन्द वृन्दावन, गोपाल चम्पू (जीव गोस्वामी) नलिकण्ठ चम्पू (नीलकण्ड दीक्षित) और चम्पू भारत (अनन्त कवि दसवीं से सत्रहवीं शती तक के उदाहरण हैं।)

यह काव्य रूप अधिक लोकप्रिय हो सका और न ही काव्यशास्त्र में उसकी विशेष मान्यता हुई।

हिन्दी में यशोधरा (मैथिलीशरणगुप्त) को चम्पू काव्य कहा जाता है। क्योंकि उसमें गद्य और पद्य दोनों का प्रयाग हुआ है।

गद्य और पद्य के इस मिश्रण का उचित विभाजन से यह प्रतीत होता है कि भावात्मक विषयों का वर्णन पद्य के द्वारा तथा वर्णनात्मक विषयों का विवरण गद्य के द्वारा प्रस्तुत किया जाए।

परन्तु चम्पू रचयिताओं ने इस मनोवैज्ञानिक वैशिष्ट्य पर विशेष पर ध्यान न देकर दोनों के सम्मिश्रण में अपनी स्वतन्त्र इच्छा तथा वैयक्तिक अभिरुचि को ही महत्व दिया है।

वैदिक काल से ही चम्पू काव्य के प्रमाण मिलते हैं हरिश्चन्द्र पाक्यानं वैदिककाल से इसकी उत्पत्ति का मुख्य उदाहरण है। चम्पू काव्य दूसरी शताब्दी ई. में जूनागढ़ में रुद्रदामन के शिलालेख पर मिलता है। यह रामायण, महाभारत पुराणों और अन्य महाकाव्यों में भी मिलता है और लेखन शैली के बाद में विकसित हुआ।

यशोधरा चम्पूकाव्य का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त गोपाल चम्पू, चम्पू भारत, आनन्द वृन्दावन, नीलकण्ठ चम्पू तथा यशतिलक चम्पू काव्य के अन्य उदाहरण हैं।

चम्पू काव्य का इतिहास—काव्य की इस विधा का वर्णन प्राचीन साहित्य शास्त्रियों वामन, दण्डी, भामह इत्यादि के द्वारा नहीं किया गया है। चम्पू काव्य का आरम्भ हमें अथर्ववेद से प्राप्त होता है, चम्पू नाम के प्राकृत काव्यों की रचनाएँ दसवीं सदी के बाद से शुरू हुईं।

दसवीं सदी के प्रारम्भ की प्रमुख रचना नलचम्पू व त्रिविक्रम् भट्ट हैं जो कि चम्पू काव्य के प्रमुख उदाहरण हैं। इनके अतिरिक्त सोमदेव सूरी द्वारा रचित यश:तिलक भोजराज कृत चम्पू भारत (अनन्त कवि) रामायण कवि कर्णपूरी कृत आनन्द वृन्दावन, गोपाल चम्पू (जीव गोस्वामी) भारत दसवीं से सत्रहवीं शती तक के उदाहरण हैं। यह काव्य रूप अधिक लोकप्रिय न हो सका और न ही काव्यशास्त्र में उसकी विशेष मान्यता हुई।

चम्पू काव्य में हिन्दी में यशोधरा मैथिलीशरणगुप्त भी कहा जाता है, क्योंकि उसमें गद्य-पद्य दोनों का प्रयोग हुआ है। गद्य और पद्य के इस मिश्रण का उचित विभाजन से यह प्रतीत होता है कि भावात्मक विषयों पद्य के द्वारा तथा वर्णनात्मक विषयों का विवरण गद्य के द्वारा प्रस्तुत किया जाए, परन्तु चम्पू रचयिताओं ने इस मनोवैज्ञानिक वैशिष्ट्य पर ध्यान न देकर दोनों के सम्मिश्रण में अपनी स्वतन्त्र इच्छा तथा वैयक्तिक अभिरुचि को ही महत्व दिया है।

'आदि कवि पंपा' सबसे महान् कन्नड़ कवियों में एवं 'रत्नत्रय' में से एक थे, उन्होंने ही शैली की शुरुआत की जब उन्होंने अपनी क्लासिकल रचनाएँ, विक्रमार्जुन विजया (पम्पा भारत) और आदि पुराण, लगभग 940 ई. में लिखी। गुणवर्मा प्रथम, जो राजा एरेप्पा (864 – 913 ई.) के दरबार में कवि थे, कन्नड़ चम्पू काव्य की रचना करने वाले पहले कवि थे। उनकी रचनाओं में हरिवंश और शूद्रक सम्मिलित हैं।

12 वीं शताब्दी में (आदि पुराण) इसका उपयोग बन्द हो गया। जब लोग त्रिपदी (तीन पंक्तिका छन्द) सप्तपयी (सात पंक्ति का छन्द) अष्टक (आठ पंक्तिका छन्द) शतक (सौपंक्ति का छन्द) और मुक्त छन्द जैसे अन्य संस्कृत छन्दों की ओर बढ़ें।

विशेषताएँ—(1) चम्पूकाव्य गद्य-पद्य मय होता है, (2) यह सांक होता है, (3) उसमें उच्छावासों में विभाजित होता है, (4) उसमें उक्ति प्रत्युक्ति नहीं होती, (5) यह विषकम्भ-शून्य होता है।

Scanned with CamScanner

गद्य काव्य अपने अर्थ गौरव और विन्यास शैली से महिमा मण्डित होता है तथा पद्यकाव्य सुललित राग-लय के साथ रमणीय अर्थ के प्रतिपादन से गौरवशाली बनता है। इन दोनों के एकत्र सम्मिश्रण से चम्पू काव्य अधिक चमत्कारी होता है। जैसे-मनोहर वाद्य के साथ सुमधुरगान अधिक आनन्द प्रदान करता है वैसे ही अर्थ गौरवश्रित गद्य रागलयाश्रित पद्य के साथ मिलकर अपूर्ण काव्य सौन्दर्य को प्रकट करता है।

Scanned with CamScanner